ब्रिटिश काल में स्त्री शिक्षा
Women Education in British Period

ARYAN Page No. Date / /

ब्रिटिश काल में स्त्री शिक्षा के विकास को निम्नलिखित चार कालों में स्पष्ट रूप से बाँटा जा सकता है-

प्रथम काल - सन् 1757 - 1853
1. द्वितीय काल - सन् - 1854 - 1902
2. तृतीय काल - सन् - 1903 - 1921
3. चतुर्थ काल - सन् 1922 - 1947
4.

1. प्रथम काल (1757 - 1853) :- ब्रिटिश काल में ईस्ट इंडिया कंपनी ने स्त्री शिक्षा को अनावश्यक समझकर इसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। इसका प्रमुख कारण यही माना जाता है कि उसे अपने प्रशासकीय एवं व्यवसायिक कार्यालयों में कार्य करने के लिए शिक्षित स्त्रियों की कोई आवश्यकता नहीं थी। इसके अलावे उस समय स्त्री शिक्षा के प्रति भारतीयों का दृष्टिकोण भी बहुत अधिक रूढ़िवादी था, वे अपने घर की लड़कियों को शिक्षा दिलाने के पक्ष में नहीं रहते थे। उस समय न तो कंपनी की ओर से और न ही जनता की ओर से स्त्री शिक्षा पर कोई जोर दिया गया, फिर भी कंपनी के शासनकाल में स्त्री शिक्षा के लिए मिशनरियों तथा सरकारी तथा गैरसरकारी व्यक्तियों द्वारा कुछ

प्रयास किए गए, जिनमें मुख्य है -

- रेवेण्ड स्कूल लड़कियों के लिए ईसाई पादरियों द्वारा खोला गया।
- सीरामपुर में केरे द्वारा बालकों के लिए स्कूल खोला गया।
- मद्रास में चर्च मिशनरी सोसाइटी द्वारा लड़कियों के लिए स्कूल खोला गया।
- श्रीमती विलसन द्वारा सेन्ट्रल स्कूल की स्थापना की गई।
- प्रोटेस्टेण्ड मिशनरियों द्वारा स्त्रियों की शिक्षा के लिए 86 आवासीय विद्यालय खोले गए।

2. द्वितीय काल (1854-1902)- सर 1854 से स्त्री शिक्षा के विकास के लिए उदारतापूर्ण नीति अपनाना ~~प्रारंभ~~ प्रारंभ हुआ, क्योंकि यह अनुभव किया गया कि भारतीय शिक्षा को अवहेलना अब और अधिक समय तक नहीं किया जा सकता है। इस काल में विकास के क्षेत्र में मील का पत्थर बना -
   (i) वुड का घोषणा पत्र।
   (ii) हण्टर कमीशन।

वुड का घोषणा पत्र - इस पत्र में स्त्री शिक्षा के महत्व को स्वीकारते हुए कहा गया कि स्त्री शिक्षा के विकास के लिए सभी संभव कदम उठाए जाने चाहिए। घोषणा पत्र में कहा गया है कि भारतीय जन-जीवन में पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति का बीजारोपण तभी हो सकेगा जब स्त्री शिक्षा का प्रसार किया जाए। घोषणा पत्र में स्त्री शिक्षा के विद्यालयों को सहायता अनुदान देने की सिफारिश की गई जिसमें स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन मिला और अनेक स्थानों पर बालिकाओं के लिए विद्यालय खोले गए।

हण्टर कमीशन, 1882 - इस आयोग ने कहा कि स्त्री शिक्षा अभी तक अत्यधिक पिछड़ी हुई है, अतः इस बात की आवश्यकता है कि इसके विकास के लिए यथासंभव प्रयास किए जाए, अतः आयोग ने स्त्री शिक्षा के विकास के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए हैं-

1. स्थानीय तथा प्रांतीय सार्वजनिक कोषों से बालकों तथा बालिकाओं की शिक्षा के लिए उचित अनुपात में धन व्यय किया जाये।

2. बालिकाओं के विद्यालयों के लिए सहायता अनुदान की मात्रा वर्तमान की अपेक्षा बढ़ा दी जाये उनके लिए सहायता-अनुदान के नियम सरल और उदार बना दिये जाएँ।

3. बालिकाओं का पाठ्यक्रम और पाठ्य-पुस्तकें बालकों से भिन्न हों। बालिकाओं के पाठ्यक्रम में साहित्यिक विषयों की अपेक्षा प्रायोगिक विषयों पर विशेष बल दिया जाये।

4. बालिकाओं की शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए अधिक छात्रवृत्तियाँ दी जाएँ।

5. बालिकाओं के विद्यालयों में यथा संभव छात्रावास दिया जाये, जिससे दूर से आने वाली बालिकाओं को रहने के लिए कठिनाई न हो और वे वहीं रह सकें।

6. बालिकाओं के विद्यालयों में यथासंभव स्त्री-शिक्षिकायें नियुक्त किया जाए।

7. बालिका विद्यालयों के निरीक्षण के लिए महिला निरीक्षिकायें नियुक्त की जाएँ।

8. बालिका विद्यालयों के प्रबंध में जनता का अधिकाधिक सहयोग प्राप्त किया जाये, जो व्यक्ति स्त्री-शिक्षा में रुचि रखते हों, उन्हें बालिका-विद्यालयों की प्रबंध समीति में रखा जायें।

9. बालिकाओं को निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाये।

10. शिक्षा के वार्षिक प्रतिवेदन में बालिका शिक्षा की प्रगति का अलग से उल्लेख किया जाए, जिसमें तत्काल तद्नुकूल प्रभावी कदम उठाये जा सकें।

3. तृतीय काल (सन् 1903 से 1921) → इस काल में स्त्री शिक्षा की सभी स्तरों पर विशेष प्रगति हुई। तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड कर्जन ने अपने समय की स्त्री शिक्षा की दयनीय दशा से क्षुब्ध होकर उसके विकास करने का दृढ़ संकल्प लिया और 1904 का शिक्षा नीति संबंधी सरकारी प्रस्ताव पारित करवाकर स्त्री शिक्षा के प्रसार के लिए अधिक मात्रा में धन खर्च किया जाए।

अनेक आदर्श बालिका विद्यालयों की स्थापना स्थापना की तथा अध्यापिका प्रशिक्षण की व्यवस्था की। इस काल में अनेक सुधारवादी सामाजिक संगठनों, आर्य समाज ब्रह्म समाज इत्यादि ने स्त्री शिक्षा के प्रसार में भरपूर योगदान दिया।

कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग (सैडलर कमीशन) 1917 → आयोग ने स्त्री शिक्षा के प्रसार पर बल दिया और इस संदर्भ में निम्नलिखित सुझाव दिए -

1. जहाँ बालिकाओं के लिए अलग से विद्यालय न हो, वहाँ वे बालकों के साथ पढ़ने के लिए जायें।

2. कलकत्ता विश्वविद्यालय में स्त्री शिक्षा के लिए विशेष बोर्ड की स्थापना की जाए यह बोर्ड स्त्रियों के लिए उचित पाठ्यक्रम का निर्धारण करें।

3. 15 या 16 वर्ष की आयु की बालिकाएँ यदि बालकों के साथ अध्ययन नहीं करना चाहती तो उनके लिए पर्दा स्कूल की व्यवस्था की जाए।

4. स्त्रियों के लिए चिकित्सा कोर्स की व्यवस्था की जाए।

5. स्त्रियों के लिए अध्यापक प्रशिक्षण के विशेष प्रबन्ध किए जायें।

चतुर्थ काल (1922 - 1947) → इस काल में वैयक्तिक, सामाजिक और राजकीय प्रयासों द्वारा स्त्री शिक्षा का पर्याप्त विकास हुआ। इसके अनेक कारण थे-

हर्टोग समिति (Hartog Committee) 1927 - 29

इस समिति ने स्त्री शिक्षा की प्रगति पर दुःख प्रकट करते हुए कहा कि देश में बालकों की अपेक्षा बालिकाओं की शिक्षा का अनुपात बहुत ही निराशाजनक है, अतः इन्होंने कहा कि स्त्री शिक्षा के पिछड़े होने के कारण हैं - जनसाधारण की उदासीनता, बालिका विद्यालयों की कमी, महिला अध्यापिकाओं का अभाव तथा दोषपूर्ण पाठ्यक्रम।

अतः इन्होंने स्त्री शिक्षा के प्रसार, विस्तार और विकास के लिए निम्न

सुझाव दिए -

1. बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा को समान महत्व दिया जाये।

2. ग्रामीण क्षेत्रों में बालिकाओं के लिए अधिक संख्या में प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना की जाये।

3. बालिका विद्यालय में अपव्यय और अवरोधन बहुत अधिक होता है, अतएव इनको रोकने का भरसक प्रयत्न किया जाये।

4. उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए बालिकाओं को प्रोत्साहित किया जाये।

5. प्रत्येक प्रान्त में एक योग्य और अनुभवी महिला की नियुक्ति की जाये, जिससे प्रांत की स्त्री शिक्षा के प्रसार की योजनाओं के लाभों की जानकारी ले सके।

6. स्थानीय संस्थाओं तथा शिक्षा समीतियों में स्त्रियों को प्रतिनिधित्व दिया जाये।

7. बालिकाओं को व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

8. अध्यापिकाओं के प्रशिक्षण की सुविधाओं में वृद्धि की जाये।

हर्टोग समिति द्वारा स्त्री शिक्षा के संबंध में किए गए प्रयास :-

1. सन् 1935 में हीरालाल शास्त्री ने राजस्थान के जयपुर में बनस्थली विद्यापीठ की स्थापना की।

2. सन् 1925 में राष्ट्रीय महिला परिषद की स्थापना की गई।

3. सन् 1927 में आयोजित अखिल भारतीय स्त्री शिक्षा सम्मेलन में शैक्षिक अवसरों की समानता की माँग की गई।

4. गाँधी जी के आंदोलनों ने लोगों में जागृति पैदा की, जिससे स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन मिला।

4. प्रांतीय स्वशासन की अवधि में भी स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन मिला।

5. द्वितीय विश्वयुद्ध के समय विभिन्न कार्यालयों में कार्य करने के लिए शिक्षित पुरुषों एवं स्त्रियों की मांग के कारण स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन मिला।

6. सन् 1946 में केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार मंडल का पुनर्गठन किया गया और इसके सुझावों के अनुसार स्त्री शिक्षा का विकास करने के लिए प्रयास किए गए।